IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

साहित्य और नारी वेदना

रागिनी सिंह[1], डॉ. भूपेन्द्र सिंह[2]
शोधार्थी (हिन्दी), शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)
प्राध्यापक (हिन्दी), शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)

शोध–सारांशः

साहित्य में नारी का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। नारी का जीवन बहुत ही संघर्षों एवं वेदनाओं के साथ गुजरता रहा, सबसे पहले नारी के लिए आंतरिक जीवन होता है, जहाँ वह जीती हैं, सांस लेती हैं और वहीं दूसरी ओर समय की चुनौतियाँ जिसका वह डट कर मुकाबला करती हैं। नारी के जीवन में सृजन के बीज अनवरत की स्थित बनी रहती है। उनकी राह आसान नहीं होती है। उक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए शोध–पत्र तैयार करने का प्रयास किया है।

मुख्य शब्दः साहित्य, नारी, वेदना, चुनौतियाँ, अस्तित्व, भयानक, स्वालम्बन, पुराणों आदि।

सन्दर्भ ग्रन्थ की सूची :

1. डॉ. सुमन सिंह, 'हिन्दी साहित्य में नारी अस्मिता के विविध रूप'
2. सूरज पाल चौहान, 'समकालीन हिन्दी दलित साहित्य'
3. शरण कुमार लिंबाले, 'दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र'
4. सुशीला टाक 'भौरे–सिकंजे का दर्द'
5. दयानिधि मिश्र, 'करम मिश्र, साहित्य में नारी चेतना'
6. डॉ. राजाराम गुप्ता, मनुस्मृति।
7. भद्रशील रावत, 'भारत की गुलामी में गीता की भूमिका'।
8. भिक्खु बोधानन्द, 'मूल भारतवासी और आर्य'।
9. डॉ. भीमराव अम्बेडकर, 'हिन्दू धर्म की रिडल ब्राह्मणशाही की उहापोह'।
10. रामचरित मानस, तुलसीदास, गीता प्रेस गोरबपुर।